* सहसग्राह जुगीह महिवासा ॥ हरनाखस नवखंड निवासा *

ॐ पुनं सवारे विनभगति अभ्यासा ॐ

आदग्रन्थसाहिब रागगोडी

अटपदी महला १

शब्द ९ तुक ६

(पुस्तक)

तत्त खालसा की पोल

(अर्थात्)

देवी देवताओं की निन्दा का खण्डन

जिसको—

सुखलाल उपदेशक श्रीभारतधर्म्ममहा-
मण्डल रोपड़निवासी ने संग्रह कर

सनातनधर्म प्रेस मुरादाबाद में

छपवाकर प्रकाशित किया.

प्रथम बार १०००]

[मूल्य =)

भूमिका

प्यारे मित्रो! कलिकाल बिकराल के प्रभाव से अनेक लोगों ने निंदा करनी मुख्य कर्म्म समझ-लिया है खासकर देवी देवताओं की निंदा करनी तो अत्युत्तम धर्म्म ख्याल करलिया है "स्थाली पुलाक न्याय" से देखिये भाई कान्हसिंह जी नाभा निवासी ने अपने दो गुटकों में अर्थात् (गुरुमतप्रभाकर) के सफे २२३ में सतर ९ से १४ तक और (गुरुमतसुधाकर) के सफे ९५ से १०२ तक कृष्णावतार यह सिरनामा लिखकर देवी देवताओं की निंदा सिद्ध की है जो गुरुबाणी से सर्वथा विरुद्ध और पापजनक है ॥ यथा—

१ निंदक सोध साध बिचारिया । कहु रविदास

---

१ गुरुमत प्रभाकर के सफे २३७ सतर २४ में भाई कान्हसिंह जी गुणों में दोषारोपण को निंदा मानते हैं,

पापी नर्क सिधारिया ॥ गौड़ी-रविदास।

२ निंदा भली किसे की नाही मनमुख मुगद करेन ॥ सूही म० ३

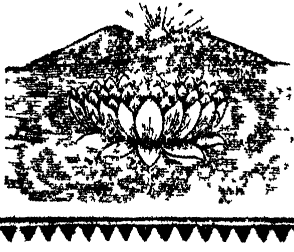
३ असंख निंदक सिर करहु भार॥जपजी म० १

४ निंदक निंदा करि मलि धोवै ओह मलु भख मायाधारी ॥ गुजरी १ म० ४

५ निंदा भली न किसैदी गुरुनिंदक ढंगै ॥ वार ३५ भाई गुरदास पौड़ी ४

अपने प्यारे भाइयों को निंदा के पाप से बचाने के लिये "तत्त खालसा की पोल" नामक यह पुस्तक समर्पण है।

सं० १९६४ जेष्ठ म० १५	ह० सुखलाल उपदेशक श्री भारत धर्म्म महामंडल रोपड़ निवासी



ॐ

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

तत्तखालसा की पोल

पाठकगणों ! पर विदित हो कि भाई कान्हसिंह नाभानिवासी ने गुरमुखीमें दो गुटके एक गुरुमतसुधाकर दूसरा गुरुमतप्रभाकर बनाकर उन में कुछ आद ग्रन्थसाहिब कुछ दशम ग्रंथ साहिब के शब्द नकल किये हैं परन्तु किसीका आदि किसी का अन्त किसीका मध्य छोड़कर वह वह पंक्तियां लिखी हैं जिनसे हिंदूमत की निंदा अथवा सिखीमत से विरोध सिद्ध हो परलोक इस लोक का कुछ भय नहीं किया केवल सिखों को सनातनधर्म से विमुख करने

के वास्ते उद्योग किया है यथा गुरुमतसुधाकर के पृष्ठ ९५ में दशम ग्रन्थसाहिब का यह वचन लिखकर ॥"मैं न गणेशहि प्रथम मनाऊँ। किष्ण बिष्ण कबहूँ न ध्याऊँ॥ कान सुने पहिचान न उन सों। लिव लागी मेरी पग इनसों॥"आप ही इसका भावार्थ तीव्रबुद्धि से यह निकालते हैं कि इस कथनसे हमारे गुरुजी का यह उपदेश है कि सर्व कार्यों के आदि में केवल वाहगुरु का नाम लो अनेक देवी देवताओं के सेवक बनकर अपनी अनन्यता को मत खोवो हरएक कार्य के आरम्भ में अरदास करनी उचित है जो देवी देवताओं के उपासक हैं वह खालसा नहीं कृष्णावतार की कथा में उक्त वचन जो लिखा है उस से हमारे गुरुसाहिव का यह भाव है कि देशहित लई उन्होंने कृष्णकथा भाषा में लिखी है कोई अज्ञानी यह न समझे कि गुरु कृष्ण उपासक थे॥ अलम्॥

अब महाशयगण देखें इसमें इस भाईजी ने कितनी अज्ञता और जड़ता खरच की है जो सर्वथा असंगत और बनावटी है आप तो जो किया सो किया अपनी गुरुवाणी को भी दोष लगाया है क्योंकि इनके गुरु उक्त शब्द में (मैं न गणेशहि प्रथम मनाऊँ) अपनी अनन्य· भक्ति भगवती के चरणों में प्रकाश करते हैं और सिंहों को भी इसका उपदेश देते हैं क्यों कि—अनन्यभक्ति हिंदूमतानुसार गुरुजी को अत्यंत प्रिय थी और अनन्यभक्त अपने उपास्य देवता को सब देवताओं का स्वरूप समझकर उसीका ध्यान करता रहता है और किसी का नहीं अतएव गुरुजी ने समग्र कार्यों के आदि में केवल भगवती की स्तुति के बिना और की स्तुति नहीं की इसीकारण यह कहा है कि—हे भगवती ! तेरे बिना मैं किसी कार्य के आरम्भ में गणेशजी अथवा श्रीकृष्णजी या विष्णुभ

गवान् का ध्यान नहीं किया क्योंकि प्रथम दिन से तेरे चरणोंमें ही ध्यान लगा है तू ही मुझको जानती है तू ही सब देवताओं की शक्ति है और देवताओं से मेरी पहचान नहीं न उनका ध्यान कभी किया है अतएव तू ही मेरी सहायता कर कि शत्रुओं का विध्वंस करके अपने हिंदूधर्म की सहायता करूँ। फिर भाईजी ने गुरुवाक्य से विरुद्ध ज्ञानी होकर क्यों उक्त भावार्थ निकाला है और जो सर्वकार्योंके आदि में वाहगुरु का नाम लेना और अरदास करनी लिखी है इस से भी हिंदू देवताओं का पूजन सिद्ध होता है अर्थात् अरदास में भगवती की स्तुति है देखो (गुटका सिखां की अरदास)॥ वाहगुरु रामादि अवतारों के नामों का समूह है ॥ यथा ॥ सतजुग सतगुर वासुदेव। वावा विष्णु नाम जपावै ॥ द्वापर सतिगुर हरीकृष्ण। हाहा हरिहरि नाम जपावै ॥ त्रेता सतगुर राम

जी । रा रा राम जपे सुखपावै ॥ कलियुग नानक गुरु गोविंद । गगा गोविंद नाम जपावै ॥ चारे जागे चहुंजुगी पंचायन विचजाय समावे ॥ चारों अच्छर इककर । वाहिगुरू जप मंत्र जपावे ॥ वार १ पौडी ४९ भाई गुरदास ॥ और 'साधु तारासिंहजी पटयाला निवासी आदि ग्रंथ साहिबजी की टीका में लिखते हैं कि वाहगुरू शब्द भट्टोंकी वाणी बिना सारे आदग्रंथसाहिब में कहीं नहींआया परन्तु गुरुवाह उलटा नाम एक जगह जरूर आया है अब तत्त्वखालसा बताये जो शब्द उनकी सर्वोपरि धर्मपुस्तक में नहीं लिखा उसको क्यों जपते हैं ॥ राम हरिगोविंद आदि शब्दों का जाप किया करें जो हजारों जगह आदग्रंथसाहिब में भरेपड़े हैं— फारसीवाले वाहगुरु का और अर्थ करते हैं अर्थात् वाह फारसी में बहुत अच्छा के अर्थ में आता है जब गुरुसाहिब कोई अच्छा काम

करते थे तो सिख वाहगुरु कहा करते थे, होते होते वाहगुरु एक शब्द होगया और परमेश्वर को कहने लगगये और सिंह दसवें पातशाह को परमेश्वर समझने लगगये थे, इसीवास्ते उन्होंने मना करदिया था (जे हमको परमेश्वर उचरहैं । ते सभ नरककुण्डमहि परि हैं) बाजे ज्ञानियों ने इसको व्याकरण की युक्ति से बहुत अर्थों में लगाया है परन्तु संस्कृत में किसी जगह नहीं, उन्होंने अपना बुद्धिबल दिखाया है वास्तव में जो है सो प्रत्यक्ष है॥ अब हम दशम ग्रन्थसाहिब का ही प्रमाण देते हैं कि कृष्णमहाराज की लीला का कुछ भाग गोविंदसिंहजी ने श्रीमद्भागवत से गुरमुखी भाषा में लिखा है इस स्थान में हम यह नहीं कहते कि भागवतानुसार है या नहीं वस्तुतस्तु उनके प्रेम का प्रादुर्भाव है जो उसके आदि में अंक ४२० से लेकर ४३९ तक २० चौपाई दोहरे कवित्तों में

भगवती की स्तुति की है परन्तु भाईजी ने आदि के १२ अंक छोड़कर अंत के ८ वचन लिखदिये कि हमारा प्रयोजन सिद्ध हो जावे परंतु इससे क्या लाभ हुआ अब देखें हम सच सच लिखकर भाई कान्हासिंहजी के ढोल की पोल खोलते हैं ॥ दसमग्रंथसाहिब में ऐसे लिखा है जिस्से श्रीभगवती जी की स्तुति स्पष्ट प्रकट है ।

अथ देवीजी की स्तुति कथनं ।

भुजंगप्रयात छंद ॥

तुही अस्त्रनी शस्त्रनी आप रूपा ।
तुही अंबका जंभ हंती अनूपा ॥
तुही अंबका सीतला तोतला है ।
पृथिवी भूम आकाश तैंही कीया है ॥४२०।

तुही मुंड मरदक परदी भवानी ।
तुही कालका ज्वालपा राजधानी ॥

महा जोग माइआ तुही ईश्वरी है ।
तुही तेज आकाश थंबो मही है ॥ ४२१ ॥
तुही रिष्टनी पुष्टनी जोगमाइआ ।
तुही मोह सो चौदहूं लोक छाइआ ॥
तुही सुंभ नैसुंभ हंती भवानी ।
तुही चौदहूं लोक की जोत जानी ॥ ४२२ ॥
तुही रिष्टनी पुष्टनी शस्त्रनी है ।
तुही कष्टनी हरतनी अस्त्रनी है ॥
तुही जोगमाया तुही वाक बानी ।
तुही अंबका जंभ हा राजधानी ॥ ४२३ ॥
महा जोगमाइआ महाराज धानी ।
भवी भावनी भूत भव्विय्य भवानी ॥
चरी अचरनी खेचनी भूपनी है ।
महा बाहनी आपनी रूपनी है ॥ ४२४ ॥
महां भैरवी भूतनेश्वरी भवानी ।
भवि भावनी भविय्य काली कृपानी ॥
जया आजया हिंगला पिंगला है ।

शिवा सीतला मंगला तोतला है ॥४२५॥
तुही अच्छरा पच्छरा बुद्धि वृद्धा।
तुही भैरवी भूपनी सिद्धि सिद्धा॥
महावाहनी अस्त्रनी शस्त्रधारि।
तुही तीर तरवार काती कटारि॥४२६॥
तुही राजसी सातकी तामसी है।
तुही बालका वृद्धनी औ जुवा है॥
तुही दानवी देवनी जच्छनी है॥
तुही किन्नृणी मच्छनी कच्छनी है॥४२७॥
तुही देवते ईशनी दानवेशा।
सरह वृष्टनी है तुही अस्त्रभेसा॥
तुही राजराजेश्वरी जोगमाया।
महामोह सो चौदहू लोक छाया॥४२८॥
तुही ब्रह्मी वैष्णवी श्रीभवानी।
तुही वासवी इश्वरी करत क्रियानी॥
तुही अंबका दुष्टहा मुंडमाली।
तुही कष्टहंती कृपालै कृपाला॥४२९॥

तुमी ब्राह्मिणी है हिरन्न्याक्ष मारयो
हरंनाकसं सिंहणी है पछारियो ॥
तुम्ही बावनी है तिनोलोग मापे ।
तुम्ही देवदानव कीये जछ थापे ॥ ४३० ॥
तुम्ही राम है कै दशो ग्रीव खंडयो ।
तुमही कृष्ण है कंस केसी विहंडयो ॥
तुम्ही ज्वालपा है विड़ालाछ घायो ।
तुम्ही सुंभ नैसुंभ दानो खपायो ॥ ४३१ ॥

दोहरा ।

दास जानकर दासपर, कीजै कृपा अपार ॥
आप हाथ दै राख मुहि, मन क्रम वचन विचार ॥

चौपाई ।

मैं न गणेशह्री प्रथम मनाऊं । किष्ण विष्ण कबहू न धियायूं कान सुने पहिचान न तिन सो । लिव लागी मोरी पग इनसो ॥ ४३३ ॥ महाकाल रखवार हमारो । महालोह मैं किंकर थारो ॥ अपना जान करो रखवार । बांह गहे

की लाज विचार ॥ ४३४ ॥ अपना जान मुझै प्रितपरिये। चुन चुन शत्रु हमारे मरिये ॥ देग तेग़ जगमें दो चल्लै। राख आप मुहि और न दल्लै ॥ ४३५ ॥ तुम मम करहु सदा प्रतिपारा। तुम साहिब मैं दास तिहारा ॥ जान आपना मुझे निवाज। आप करो हमरे सभकाज ॥४३६॥ तुम हो सभ राजन के राजा। आपे आप ग़रीब-निवाजा ॥ दास जानकर कृपा करहु मुहि। हार परा मैं आन द्वार तुहि ॥ ४३७ ॥ अपना जान करो प्रतिपारा। तुम साहिब मैं किंकर थारा। दास जानकै हाथ उभारो। हमरे सब वैरियन संहारो ॥ ४३८ ॥ प्रथम धरो भगवति को धियाना। बहुर करो कविता विध नाना ॥ कृष्ण जथामत चरित्र उच्चारो। चूक होय कवि लेहु सुधारो ॥ ४३९ ॥ इति श्रीदेवीस्तुत समाप्तं ॥

अब पाठकगण विचारें कि उक्त वचनों से भगवती माता की स्तुति निकलती है वा नहीं

स्पष्ट सीधी बात में पक्षपाती भाईजी ने कितने हाथ पैर मारे हैं यह सज्जन ज्ञानी पुरुषों का काम नहीं जो अपनी सर्वोपरि धर्मपुस्तक में इतना छल कपट करके भोले भाले सिंहों को गुरुवचन से विमुख करें और अपने कुमको अरदास की ठहरावें, अभी आगे और भाईजी लिखते हैं कि (इस पाठके अन्त में । इति श्री देवीस्तुत समाप्तं) इसको देखकर बहुत अज्ञानी भ्रम में पड़कर यह बात कहते हैं कि (लिव लागी मोरी पग इनसों) आदिक पद देवी की स्तुति में हैं परन्तु यह उनकी भूल है !! उत्तर— वाह वाह दो सौ सालके लगभग होचुके आप के गुरुजी के समय से लेकर आजतक समग्र ज्ञानी भाईजी यही अर्थ करते थे कि यह भगवती की स्तुति है और वास्तव में ग्रंथसे भी यही सिद्ध होता है आप उनको अज्ञानी की पदवी देते हैं अच्छी सूझी है वास्तव में वह

सचे ज्ञानी थे यदि आपको सर्वोपरि अज्ञानी की पदवी दीजावै तो योग्य है क्योंकि पिछले ज्ञानी अक्षरानुसार अर्थ करते थे आप वृथा गाल बजाते हैं इस स्तुति के आदि में (अथ देवी जी की स्तुत कथनम्) लिखा है और अन्त में भी (इति श्रीदेवीस्तुत समाप्तम्) कथन किया है ॥ फिर उनकी भूल क्यों बनाते हो अपनी भूल स्वीकार करो ॥ भाईजी फिर लिखते हैं ॥ महाकाल, महालोहसाहिब आदिक पद देवी के वास्ते नहीं आसक्ते यह केवल अकालपुरुष वास्ते हैं ॥ उत्तर—क्यों नहीं आसक्ते क्या दोष है शायद यह भ्रम हुआ होगा कि देवीपद स्त्री वाचक है और साहिब आदि पुरुष के वास्ते आते हैं खूब भला भाईजी मिंजी साहिब सवारा साहिब दुखभंजनी साहिब, आदि पद जो आपके रोज बोलेजाते हैं यह क्यों हैं आपकी बोलचाल में तो स्त्रीलिंग कोई पद नहीं बोलते

सर्वत्र पुल्लिंग बोलते हैं जैसे सवारी को सवारा आदि फिर आप यहां क्यों घबरागये गुरुसाहिब देवीजी को अपना इष्ट मानते थे महाकाल महालोह आदि सब नाम भगवती के रखे हैं भगवती के भिन्न और की स्तुति उनकी कविता में नहीं खगडा तलवार आदि अनेक नाम सब देवी के लिये हैं यथा ॥ तुही तीर तरवार कातीं कटारी ॥ तुही बालका वृद्धनी औ जुवा है ॥ पृथवी भूम अकाश तैंही किया है ॥ इत्यादि देखो दसमग्रंथसाहिब शस्त्रनाम माला में ॥ अनगिणत नामों से भगवती की स्तुति की है इस से भिन्न अकालपुरुषादि कोई नहीं समझा सर्व हर्ता कर्त्ता देवीको ही समझते थे ॥ भाईजी अब यह भोग पाते हैं ॥ (लोगोंको भ्रम इसलिये है कि दशम गुरुजी की बाणी का एकत्र होते वक्त पाठ आगे पीछे होगया)॥ उत्तर॥ दसमग्रन्थसाहिबजी का पाठ आगे पीछे कोई नहीं

हुआ सिरफ भाईजी का धोखेदेही है क्योंकि दसम ग्रन्थसाहिब करामात से कायम रहा है देखो उक्त भाईजी का रचा गुरमतसुधाकर सफा १४२ सतर ११ से २१ तक॥ यथा—

सं० १९०६ वि० में भाई मताबसिंहजी अमृतसरजी की बेअदबी का हाल सुनकर मस्से रंघड़ को मारने के इरादे से बीकानेर से दमदमे साहिब के रास्ते आए इस मुआमले में जब उन से राय लीगई तो उन्होंने कहा कि अगर मैं अमृतसरजी में शहीद होगया तब दसम गुरु जी की बाणी की एक बीड़ न रखनी और जेकर मैं मस्से को मारकर इस जगह वापिस आगया तब बीड़ कायम रहे और मताबसिंहजी अरदास करवाकर अमृतसरजी को गए और मस्से को मारकर दमदमे साहिब में आए उसी तरह दूसरी बीड़ कायम रही जिसको अब 'दसवीं पातसाही का ग्रंथसाहिब' कहते हैं॥

मित्रो ! भाईसाहब को अपने लेख के परस्पर विरोधका भी ख्याल नहीं रहता सफे १०१ में दसम ग्रंथसाहिब का पाठ आगे पीछे हुआ बतलाते हैं सफे १४२ में पाठ आगे पीछे नहीं हुआ करामात से कायम रहना लिखते हैं मित्रो जिल्द बांधनेकेवक्त पाठ आगे पीछे नहीं होसक्ता पत्रा आगे पीछे होना सम्भव है और यह नहीं लिखा कौनसा पाठ आगे पीछे हुआ है वास्तव में किसप्रकार था अब कैसा है और यह विचार नहीं किया कि स्तुति में पाठ आगे पीछे होने से कुछ हानि नहीं होती किस्से कहानी में भ्रम जरूर होजाता है और न भाईसाहिब ने कोई शुद्ध ग्रन्थसाहिब दिखलाया जिसमें पाठ आगे पीछे न हुआ हो यदि जिल्द बांधने के वक्त पाठ आगे पीछे होजाता तो फिर क्या जिल्द दुरुस्त नहीं होसक्ती थी क्योंकि पहिले पहल जिल्द गुरुजी के सामने बांधीगई थी यदि ऐसा होता

तो उसीसमय दुरुस्ती करादेते यह आश्चर्य है जो अशुद्धि गुरुसाहिब को और आजतक किसी ज्ञानी को प्रतीत न हुई इनको दो सौ साल पीछे कोई सहीद बतलागया होगा इसी भाईजी ने अपने गुरमतसुधाकर के पृष्ठ १३९ में लिखा है कि गुरुजी के पास बावन ५२ कवि रहा करते थे उन्होंने वहारदानिश आदि फ़ारसी किताबोंका तरजुमा करके दशम ग्रन्थसाहिब में ४०४ त्रिया चरित्र लिखदिये—यह लेख भी अमाननीय है कवियों के बनाये हुए यह चरित्र नहीं बल्कि गुरुजी ने बनाये हैं कवियों के बनायेहुए महाभारतादिक और ग्रन्थ थे जिनमें से कहीं कहीं अब भी मौजूद हैं जिनकी रचना इसप्रकार थी- जो लौ सुर सरिता सुक विहंस राम कहें कीरत कर्ण की करणा अवगाहवी। वह ग्रन्थ नौ मनके तोलमें थे ॥ यथा—तिन कवियन बाणी रची लिख कागज तुलवाय। नौ मन हूए तोलमें सूक्ष्म

लेख लिखाय ॥ विद्याधर तिस ग्रन्थ को नाम धर्यो कर प्रीत ॥ अब हम भाई मनीसिंहजी आदि की रचना से इन चरित्रों का गुरुवाणी होना सिद्ध करते हैं यथा—भाई गुरदासजी की वार ११ टीका भाई मनीसिंह साखी १३४। सिखाने भाई मनीसिंहजी पास प्रश्न कीत्ता जो आदि वाणी होई है सो भक्तिमई है ॥ ते साहिब दसवें पातशाहजी जो वाणी कीत्ती है सो जुद्धमई है ॥ के अर्थां दे चरित्र हैन ॥ इसदा सिद्धांत क्योंकर समझिये ॥ तां भाईजी कहिआ जैसे अर्जुन जुद्ध दे समे शस्त्र छोड़ बैठा सी ॥ ते श्रीकृष्ण महाराज ने उसनूं उपदेश करके फेर वर्णआश्रम दा धर्म दृढ़ करके जुद्ध दृढाया सी ॥ तैसे हिंदुआं ने हिंसा को कुधर्म जानकै शस्त्र छांड़दित्ते सन ॥ ते मलेच्छां ने शस्त्र पकड़लित्ते सन ॥ ते शस्त्र दे बलकर पृथिवी दा राजभोग दे सन ॥ ते हिंदुआं दे विच भक्ति-

होवन नहीं से दिंदे ॥ ते साहिब दसवें पातशाह ने खालसे नू रघुवंश जानकै फेर राज लै देवना सी ॥ तां जुद्धमई बाणीयां उच्चारण कीतीयां ॥ ते शस्त्रां दी विद्या दृढ़ कीती ॥ ते ज्ञान दा उपदेश कीत्ता ॥ जो शरीर तुसां झूठे जानने ॥ ते तुसाडे वर्ण दा धर्म जुद्ध है ॥ ते जुद्ध जीतोगे तां राज भोगोगे ॥ जो जुद्ध विच मृत होवोगे तां स्वर्ग भोगोगे ॥ ते जो ज्ञान नू दृढ़ करोगे तो जीवनमुक्त होकै विचरोगे ॥ जैसे मूरतां इक मलेच्छां दीआं अनंत है सन ॥ तैसे उनांदे सनमुख सिंहां दीयां मूरतां बनाय खड़ी कीतीआं हैन ॥ ते आप कौतक देखदे हैन ॥ जैसे घोड़ा किसे बूटे थीं झाकदा है । तां कारसवार उसनू बूटे थीं त्रपायके लै जांदा है ॥ तैसे हिंदु शस्त्रां थीं भै मान हैसन जुद्धमयी बाणी अते ज्ञान उपदेश करकै एना थीं जुद्ध करवाया है । ते चरित्र इसवास्ते लिखे हैन ॥ जो स्त्रियां

दे भोग विच तुसी मन नू नहीं बंधना ऐसीआं जानके सतगुरां दे शब्द नाल प्रीत अर शस्त्रां विच प्रीत रखनी ॥ ते जुद्धमयी वाणी इसवास्ते कीती है ॥ जो भगतीमयी वाणी पढ़कै जुद्ध ना कर सकनगे ॥ जुद्धमयी वाणी ते स्तोत्र देवी दे पढनगे ॥ इसदे शस्त्रां विच सहायता होवेगी ॥ जिस समे जुद्ध करके राज करनगे तां भगतां दी सेवा करनगे ॥ महाराज दी भगती सारे जगत विच विसतार होवेगी ॥ दसवें पातशाहीजी दा औतार धर्म वरतावन वास्ते होया है ॥ इना दे राजविच गौ दी ते ब्रह्मण ऋषी मुनीश्वरां दी सर्व दी रक्षा होवेगी ॥ होर वाहगुरु दे गुण अनेक हैन ॥ ते वाहगुरु के सिख भी अनेक वरसाणे हैं ॥ सो भैथी गिणे नहीं जांदे ॥ अलम् ॥ समीक्षा ॥ इस साखीसे तत्वखालसा की आंखें खोलनेवाली बहुत बातें निकलती हैं।

(१) श्रीकृष्णजी की ताजीम उनको भाई मनी

सिंहजी श्रीकृष्ण महाराज लिखते हैं जिनकी शान में मूर्ख लोग वृथा हलक फाड़ते हैं ॥

(२) वर्ण आश्रम की दृढ़ता जिसके विरुद्ध आज चूहडे चमारों तक एकमयी तत्त खालसा में होरही है ॥

(३) हिंदु शब्द सिद्ध होता है जिसके खण्डन में भाईजीने हम हिन्दू नहीं ट्रैक्ट मूर्खता से लिखा है ॥

(४) हिंदुओं की सहायता जिस गुरू हुकम से अब तत्तखालसा सुनकर होरहा है ॥

(५) स्वर्ग की सिद्धि ॥

(६) दशम ग्रन्थसाहिब दशवें पादशाह का बनाया हुआ है ॥

(७) स्त्रियों के ४०४ चरित्र गुरुसाहिब के रचेहुए हैं ॥

(८) देवी के स्तोत्र जो ग्रंथसाहिब में हैं वह

गुरुजी ने कहे हैं कवियों के नहीं जिससे बल और तेज प्रताप की प्राप्ति होती है ॥

(९) गौ ब्राह्मण की रक्षा के वास्ते दसवें गुरु साहिब हुए थे ॥

अब लोग इस साखी को पढ़कर गौर करलें कौन सच्चा है ॥

भाईजी साखी १३४ को देखकर समझ लें कि झूठे आप हो या श्रीमान् भाई मनीसिंह जी गुरु १० वें के ग्रंथी और पंडित तारासिंह पटयाला निवासी अपने गुरुमत निर्णयसागर के सफे ६०३ में लिखते हैं कि ग्रंथसाहिब दशमी पातशाही का सभी प्रमाण है बहुत लोग इसमें आदि में भट्टों की कविता वत् गुरु पास रहनेवाले कवियों की कविता कहते हैं और कवियों की कविता मैं पादशाही दस आदि में लिखा देखकर उसको गुरुवाणी कहते हैं। बुद्धिमान इस ार ं सते हैं अत्यंत अफसोस

उन लोगोंपर है जो जिम चौपई और चंडी चरित्रादिकों के साथ रहराम और पीछे से लोपचंडिका होगई ऐसा नित्य नेम करते हैं और वह जिल्द में है और गुरु की रचना से फरक नहीं अर्थ विरुद्ध नहीं फिर उसको कवियों की बनाई कहते हैं॥ जो तनख्वाह नामे जैसीयां कवियों कीयां बनाइयां जिल्द से बाहर गुर की वाणी से विरुद्ध अर्थ वालियां हैं। तिनपै पूरा निश्चय रखते हैं। जो परीक्षा कर उसपर तरक उठाते हैं और वाणीका अर्थ न जानने से परीक्षा की समर्थ नहीं रखते। इसी वास्ते चंडीचरित्र में उक्त विलास पद का अर्थ न जानने से यह विलास कवि की उक्ति है ऐसा अर्थ समझ के इसको विलास कवि की कविता समझते हैं। अकाल स्तुति के सवैयों में भूपत और श्रीपति पदों से भूपति और श्रीपति कवि की कविता समझते हैं एवं जिसमें मंगल पद देखें उसको मंगल

की कविता जानते हैं। ऐसे गुरुकी वाणी में बिला-
सादि पदों का अर्थ न जानने से कवियोंका नाम
समझके जाप श्रीमुख वाक सवैये ऐसे और कुछ
थोड़ीसी वाणी विना अन्य कवियों की सारी
समझते हैं। अन्य कवियों की समझाने में जान
पड़ता है कि उन्होंने यह वीज जाना। कहीं कहीं
गुरुवाणी में (श्रीमुख वाक) लिखा है उस से
उनको यह शंका हुई कि और वाणी गुरमुखवाक
नहीं। कवियों की है परन्तु यह समझाना उन
का मिथ्या है। क्योंकि वह लिखना गुरुका एसा
है। जैसे आदि ग्रन्थसाहिब में कहीं कहीं शुद्ध
लिखा है। वास्तव में उतने शुद्ध लिखने से और
अशुद्ध नहीं सिद्धहोता। तैसे कहीं कहीं (श्रीमुख)
वाक लिखने से और वाणी अन्य कवियों की
नहीं सिद्ध होती यदि सिद्ध होवे तब रहरास में
अन्य कवियों की बनाई चौपाई न पड़नी चा-
हिये॥ और सेवक सिक्ख हमारे तारी । यह

कहना भी मिथ्या होवैगा क्योंकि गुरु विना गुरु के सिक्ख किस कविके सिक्ख हैं। एवं चंडी चरित्र में । देह चंडिका मोह । कहना मिथ्या होवेगा । इसलिये ग्रंथसाहिब में सभी वाणी गुरुकी है और प्रमाणिक है ॥ चरित्र कथा-कांता समित न्याय से भर्तादिक ऋषियों के स्त्रीभेद के निर्णयवत उपदेशार्थ लिखी है और अपने जनों को छल से बचावने की शिक्षा वास्ते बनाई है। कृपालन भीजत लांड कदाये ॥ इत्यादि स्पष्ट लिखना स्वतन्त्रता से है भट्टोंवत गुरुभक्त कवियों की हो तो बीच रहो परंतु भट्टों की वाणीवत कवि के नाम से निर्णय करी हुई विना कवि की कहना फिर भी अनुचित है इस वास्ते यह सब गुरु की है और प्रमाण है और जिसमें गुरु का नाम लिखा है वास्तव में गुरु की बनाई हुई नहीं सो प्रमाण नहीं और जिसके आद में पातशाही दस लिखा देख

कर नंदलाल गुरू का सम्वाद जानकर गुरू की बनाई समझते हैं यदि विचार से देखो तो वह गुरु की वाणी नहीं परस्पर विरोध है गुरु रचना से विरुद्ध है क्योंकि गुरु साहिब दशम ग्रंथ में लिखते हैं, जितेशास्त्रनामं । नमस्कार तामं । यह नहीं लिखा । जिते जगत लोहा । नमो तास मोहा ॥ यदि लोहे मात्र को नमो तास मोहा ॥ यदि लोहे मात्र को नमो लिखते तब तो समग्र लोहे का अदब होता चर्ण लगाने वाले की अपगति होती सो गुरु ने ऐसा नहीं लिखा इसलिये मोहर तुरक का सिर धरे लोह लगावे चर्ण । कहे गुबिंदसिंह सुन लालजी फिर फिर होय तिस जन्म । यह किसी मनमुखी का वचन है जिसने सर्ब लोह का अर्थ सारा लोहा समझा और सिंहों को रकाबां पर पैर न रखने की तकलीफ दी और सदा उनकी दाल भाजी काली कराई ॥ इसका यह सिद्धान्त हुआ

कि समग्र दशमग्रंथसाहिब गुरुवचन है आदि में श्रीमुखवाक लिखा हो अथवा न लिखा हो यह कोई आवश्यकता नहीं ॥ नहीं तो समग्र शब्दों के प्रथम आदिग्रन्थ की सदृश कवियों के नाम होते। अलम्॥

अंतिम प्रार्थना

मित्रो ! जो तत्त्वालसाजी की दशम ग्रंथ-साहिब प्रामाणिक पुस्तक के अध्याय १४ के अंत में अकाल और सर्व काल के नाम से श्रीभगवती देवी और चंडीजी की उनके गुरूजी स्तुति करते हैं यथा—

(१) प्रथम देवीचरित्र को कहा ॥ १० ॥

(२) पहिले चंडीचरित्र बनायो ॥
नख सिख ते क्रम भाख सुनायो ॥
छोर कथा तब प्रथम सुनाई ॥
अब चाहित फिर करूं बड़ाई ॥ ११ ॥

इति श्रीबचित्र नाटक ग्रंथे सर्बकाल की बेनती

वरणनं नाम चौदसमो अध्याय समासम् ।

और उक्त प्रकरण श्रीकृष्णअवतार कथा के मध्यभागमें लिखते हैं जहां रासलीला का प्रसंग है (जिस को दसवें पातशाह धर्म्मजुद्ध मानते हैं)(दसम कथा भागवत की भाषाकरी बनाय॥ और बासनानाहि प्रभु धर्म जुद्ध के चाय)इत्यादि कविता के भावको कठिन जानकर अपने इष्टदेव श्रीभगवती जी के चर्णों में अनन्य भक्ति दिखलाते हैं ।

यदि भाई कान्हसिंह के कथनानुसार (कृष्ण विष्णु) का निषेध है तो उनके गुरूजी पर परस्पर के विरोध का कलंक लगता है॥यथा–

(१) अथ श्रीदेवीजी की स्तुतिकथनं ॥

कविता अंक ४२० से ४३९ तक इति श्रीदेवी जी की स्तुति समासम् २० अंकों में भगवती की अनन्य भक्ति से स्तुति है जैसे समग्र ग्रंथकार आद में अथ और अंतमें इति लिखते हैं और

मध्य में उसी प्रकर्ण का जिकर होता है इसी प्रकार उक्त बीस अंकों में भगवतीजी की स्तुति है उसमें वाहगुरू अकाल पुरुष का कोई प्रसंग नहीं यदि यह माना भी जावे तो वह भगवती को ही वाहगुरु अकाल पुरुष जानते थे यथा--

तूही अंबका सीतला तोतला है ।
पृथवी भूम आकाश तैंही किया है ॥४२०॥
तुहीं कालका ज्वालपा राजधानी ॥४२१॥
तुहीं सुंभ नैसुंभ हंती भवानी ॥४२२॥
तुही ब्रह्मणी वैष्णवी श्रीभवानी ॥४२९॥
तुही राम हैके दसग्रीव खंड्यो ।
तुही कृष्ण हैके कंस केसी विहंड्यो ॥४३१॥

भाईजी अब गिरेवान में मुंह डालकर फरमाइये कि आपका कपोलकल्पित अभिप्राय (मैं न गणेश हि प्रथम मनाऊं । किसन बिसन कबहूं नहीं ध्याऊं) किसप्रकार सच्चा होसक्ता है जब आपके गुरु कृष्ण और विष्णु का रूप

दुर्गा को मानते हैं फिर निषेध कैसा यह केवल आपकी बुद्धि का भ्रम है वास्तव में देवी देवता सर्व एकरूप हैं ॥

(२) श्रीभगवतीजी की अनन्य भक्ति विशेष करके इस कारण प्रकट है कि उक्त बीस अंकों में भगवती की स्तुति के सिवाय और कुछ नहीं यथा -तुधी सुंभ नैसुंभ हंता भवानी इत्यादि सर्व स्तुति में हैं ॥

(३) अकाल स्तुति में श्री दुर्गाजी की अनन्य भक्ति से स्तुति की है नमूने के लिये देखो यथा-चंचला चखङ्गी अलक भुजङ्गी तुंद तुरंगण तिच्छसरं। कर कसा कुठारे नर्क निवारे अधम उधारे तूर भुजे॥ दामनी दमंके केहर लंके आदि अन्तके क्रूर कथे ॥ जै जै हं सा रक्तासुर खंडन सुंभ चकरदन सुंभ मथे ॥ २१ ॥

(४) अब हम दसवें पादशाह की भगवती के चर्णों में अनन्य भक्ति एक और प्रमाण से भी

सिद्ध करते हैं दसम ग्रंथ साहिब में जहां भागवत का तरज़ुमा किया है वहां भी भगवतीजी की स्तुति की है वास्तव में वह भागवत के किसी श्लोक का तरजुमा नहीं वह केवल गुरूजीने भगवती को इष्टदेव जानकर लिखी है यथा कृष्ण अवतार कथनं ॥

अंक ४ से लेकर अंक ८ तक ॥ चौपाई ॥

जेजे कृष्ण चारित्र दिखाए ।
दसम वीच सभ भाख सुनाए ॥
ग्यारां सैहस वनावे छंदा ।
कहे दसम पुर बैठ अनंदा ॥

अथ देवीजूकी स्तुति कथनं ॥ ४ ॥

सवैया ।

होइ कृपा तुमरी हमपै तु सभै सगनं गुन ही धरिहों । जीय धार विचार तवै वर बुद्धि महा अगनं गुनको हरिहों ॥ विन चण्ड कृपा तुमरी कबहूं मुखते नहीं अच्छर हउं करिहों ।

तुमरो कर नाम किधो तुलहा जिम वाक समुद्र विखै तरिहों ॥ ५ ॥

दोहरा ॥

रे मन भज तूं सारदा, अनगन गुण है जाहि ॥
रचों ग्रंथ इह भागवत, जो वै कृपा कराहि ॥६॥

कवित्त ॥

संकट हरन सभ सिद्ध की करन चंड तारन तरन सरन लोचन विसाल है। आदि जाकै आहिव है अन्त को न पारा वारु सरन उवारन करन प्रतिपाल है ॥ असुर संहारन अनिक दुख जारन सु पतित उधारन छुड़ाए जमजाल है। देवी वर लायक सु बुद्धहूं की दायक सुदेह वर पायक बनावै ग्रन्थ हाल है ॥ ७ ॥

सवैया ॥

अँद्रसुता हूं की जो तनया महिखासुर की मरता फुन जोऊ। इन्द्र को राजहि की दिवया करता वध सुंभ निसुंभहि दोऊ ॥ जो जपकै

इहसेव करै वरको सुलहै मन इच्छत सोऊ। लोक विखै उहकी सम तुल्ल गरीव निवाज न दूसर कोऊ ॥ ८ ॥

इति श्रीदेवीजी की अस्तुति समापतं ॥

भाईजी इसीप्रकार अथ और इति श्रीदेवीजी की स्तुति के उक्त २० अंकों में है आप वृथा क्यों गाल बजाते हों। गुरुवाणी में क्यों बनावट बनाते हों वाहगुरु से डरो—अब तत्तखालसा यह प्रश्न करसक्ता है कि भला श्रीकृष्ण विष्णु भगवती माताकी तो स्तुति सिद्ध होगई परन्तु गणेशजी की पूजा कहां सिद्ध हुई यह तो उड़गई इस कुतर्कका भी उत्तर सुनिये। देखो भगत रत्नावली बार ११ भाई गुरदासजी की टीका भाई मनीसिंहजी साखी १२९—भाई भानू को छीवें पादशाह (हरिगोविंदसाहिव) उत्तर देतेहुए सर्व से प्रथम श्रीगणेशजी की पूजा सिद्ध करते हैं ॥ यथा ॥ वचन होआ जिससमय ब्रह्म

ने जग रचिया है। सभ देवीआं देवते रिखी-सुर मुनीसुर सभ आन इकट्ठे हुए। तां ब्रह्मे नै विष्णदेव को कहिआ। प्रथमे पूजा किसकी करिये। तां महाराज ने कहिआ सारे वैराट की परदखणा देकै जो प्रथमे आवै उसकी पूजा प्रथमे करिये। तां सभे देवते आपो आपनिआं वाहना ते चड़िकै वैराट के परदखणा को गये। और गणेशजी का वाहन चूहा है। अर हाथी का सीस चतुरभुजा अर भारा शरीर सो बैठा रिहा॥ तां उसने रारा ते मम्मां अखर रामनाम दे लिखकर चूहे उत्ते चड़के तीन वेरी परदखणा करकै महाराजजी दे अगे आयकर मत्था टेकिआ। तां महाराज ने अपणे सिंघासन के नजदीक बैठाय लिआ। जब सभे देवते परदखणा करकै आये तां ओनानै पुछिआ पैहलां कौन आया है तां महाराज नै किहा प्रथमें तुम सभना ते गणेशजी आये हैं। जो गणेशजी ने

नाम और नामी को अभेद जाणिया है जो नाम और नामीको अभेद जाणकर जपदे हैं सो सारे जगत में पूजनीय होते हैं क्यों भाईजी अब तो आपके गुरुवाक्योंसे गणेशजी की पूजा भी सिद्ध होगई अर्थात् आपके दसों गुरु पक्के सनातनधर्म्मी थे आपने दयानंदियों को देख कर नवीन पन्थ मनघड़त रचना प्रारम्भ किया है आपकी इच्छा आपके गुरुसाहिबान आपसे समझेंगे हम कुछ नहीं कहते । अलम् ॥

सूचना ।

जिस सच्चे धर्मावलम्बी ने इस विषय में तत्त्वखालसा की कुछ और पोल देखनी हो वह निम्न लिखित मेरी पुस्तकें विशेषता से देखें— नवीनसिंह शिक्षा शास्त्री ।-) और नवीनसिंह सिख्या गुरमुखी ।।) । गुरुघर में दानविधी नागरी ।) खालसा कुरीति निवारन गुरमुखी -) तत्त्वखालसा की पोल नागरी =) यह समग्रपुस्तकें शहर रोपड़ जिला अम्बाला सुखलाल उपदेशक से ही मिलसक्ती हैं, और किसी से नहीं ।

शास्त्रार्थ के लिये चैलेंज।

भाई कान्हसिंहजी नाभा [illegible] से न-
विनय प्रार्थना है कि उन्होंने (सिक्ख [illegible])
तीसरे अडीशन ॥ [illegible] के चार
पांच सफे गुरमुखी लिखकर श्रीदुर्गाजी आदि
देवी देवताओं की झूठी निंदा की है जो सर्वथा
उनके धर्मग्रन्थों से विरुद्ध और अप्रामाणिक है
यद्यपि हमने कई पुस्तकें लिखकर खण्डन कर
दिया है परन्तु हम चाहते हैं कि आम खास
लोगों के सम्मुख एक शास्त्रार्थ होजावे जिस
से सच झूठ का निर्णय प्रकट हो यदि भाई सा
हिब ने इस उक्त विषयमें ही एक वर्ष के भीतर
नियमपूर्वक शास्त्रार्थ न किया तो पाठकगण
स्वयं समझलें कि उन्होंने वृथा लेख लिखकर
भोले भाले सिक्खों को सिक्खीधर्म से च्युत करके
मनमत चलाई है और भाईसाहिब के सर्व
लेख झूठे हैं अलम्। गुरुविद्यारत्न—

सं० १९६४ } ह० सुखलाल उपदेशक श्रीभारत
माघ प्रविष्टे ११ } धर्म महामंडल रोपड़ निवासी